भारत में समावेशी शिक्षा की रूपरेखा

अनुप्रिया चड्ढा

छात्रों की शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रमों को बनाने की जरूरत को देखते हुए ऐसे कोर्स लाने की दिशा में कदम उठाए जा रहे हैं जिसमें सभी विषयों का समावेशन हो। आमतौर पर पाठ्यक्रमों में लैंगिक, जातीय, भाषाई भेदों आदि विषयों से जुड़े मुद्दों की उपेक्षा की जाती है। वर्तमान समय की जरूरतों और चुनौतियों को पूरा करने के लिए एक ऐसे विशिष्ट समावेशी शैक्षिक पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जो आम और खास दोनों ही तरह के शैक्षिक पाठ्यक्रमों में मार्गदर्शक साबित हो सके। इस दिशा में निरंतर और व्यापक मूल्यांकन के नवीन दृष्टिकोण को एक सकारात्मक कदम के रूप में देखा जा रहा है

समावेशी शिक्षा केवल एक दृष्टिकोण ही नहीं बल्कि एक माध्यम भी है, विशेषकर उन लोगों के लिए जिनमें कुछ सीखने की ललक होती है और जो तमाम अवरोधों के बावजूद आगे बढ़ना चाहते हैं। यह इस बात को दर्शाता है कि सभी युवा चाहे वो सक्षम हो या विकलांग... उन्हें सीखने योग्य बनाया जाए। इसके लिए एक समान स्कूल पूर्व व्यवस्था, स्कूलों और सामुदायिक शिक्षा व्यवस्था तक सबकी पहुंच सुनिश्चित करना बेहद जरूरी है। प्रशिक्षुओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए यह प्रक्रिया सिर्फ लचीली शिक्षा प्रणाली में ही संभव है। समावेशी शिक्षा ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसमें मूल्यों, ज्ञान प्रणालियों और संस्कृतियों में प्रक्रियाओं और संरचनाओं के सभी स्तरों पर समावेशी नीतियों और प्रथाओं के सृजन के माध्यम से बुनियादी मानव और शारीरिक, संवेदनशील, बौद्धिक या स्थितिजन्य हानियों के साथ सभी नागरिक अधिकारों को प्राप्त किया जाता है। स्कूल शिक्षा (एनसीईआरटी, 2005) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ने रूपरेखा, सामग्री, प्रस्तुति और लेन-देन की रणनीतियों में उचित संशोधन करने के लिए शिक्षकों को तैयार करने और अनुकूल मूल्यांकन प्रक्रिया सीखने के विकास के लिए विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं के साथ शिक्षार्थियों के लिए समावेशी स्कूलों की सिफारिश की है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली की खोज

इस संदर्भ में यह जरूरी है कि प्रथाओं और विचारधारा का पता लगाया जाए जो कि समावेशी शिक्षा प्रणाली के सृजन और विचारधारा को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। 3R के दृष्टिकोण पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करने के वर्तमान अभ्यास को शिक्षा नहीं एक प्रक्रिया के रूप में देखा जा रहा है। इसे एक उत्पाद के रूप में किया गया है: एक रिपोर्ट से मिलकर मूर्त इनाम, शैक्षणिक वर्ष के अंत में डिग्री के रूप में। इस समय छात्रों को वैश्विक नागरिकों के रूप में योगदान विकसित करने के लिए शिक्षा प्रणाली के समग्र लक्ष्यों का पुनर्गठन करने की तत्काल आवश्यकता है। बच्चे जब स्कूलों में ज्ञान प्राप्ति में असफल हो जाते हैं तब उनके भीतर कुछ गलत अनुभव करने के लिए आकर्षण प्रबल हो जाता है। उस समय यह शिक्षा व्यवस्था कुछ आत्मनिरीक्षण करती है।

'समावेशी शिक्षा' की यह व्याख्या चुनौती देती है समावेशी विद्यालयों की स्थापना के लिए, जहां पर सब एक दूसरे को स्वीकार करे, एक दूसरे का समर्थन करे, और एक दूसरे का सहयोग करे। यहीं नहीं, पाठ्यक्रम में स्कूल समुदाय के सदस्यों को भी शामिल किया जाना चाहिए। जहां पर सबकी जरूरतों को पूरा किया जा सके।

एक ऐसी पारंपरिक पाठशाला जहां वयस्कों द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षण की गतिविधियों से संबंधित निर्णय लिए जाते हैं, और इन गतिविधियों से छात्रों को सीखने का अवसर मिलता है। प्रमुख सलाहकार को शिक्षा समेत सर्व शिक्षा अभियान का आकलन करने का अवसर मिलता है इसके जरिए बच्चों को कागज और कलम से यानि पढ़ाई के लिए आकर्षित किया जाता है। अक्सर इसका उद्देश्य अध्यापक और विद्यार्थियों के बीच की कड़ी

लेखिका शिक्षा का अधिकार तथा सर्वशिक्षा अभियान के संदर्भ में समेकित शिक्षा विषय पर राष्ट्रीय स्तर की प्रमुख परामर्शी हैं। उन्होंने समेकित शिक्षा विषय पर कई किताबें और आलेख लिखें हैं। उन्हें विकलांगजनों के हित में सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत प्रयास के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। ईमेल: iedtsgssa@gmail.com

को जोड़ना है। इस तरह की पाठशाला की धारणा छात्रों के ज्ञान रूपी भंडार को समृद्ध करना है। दूसरी ओर, समावेशी कक्षाओं में ऐसा माहौल है जिससे बच्चों में स्कूली शिक्षा के अलावा अन्य गतिविधियों से जुड़ने का मौका मिले और समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। इससे जुड़े शिक्षक न केवल छात्रों को आधारभूत शिक्षा मुहैया कराए बल्कि लीग से हटकर उन्हें विषयक निर्देशों, सभी भाषाओं का ज्ञान, आलोचनात्मक नजरिए से रूबरू कराने, अपनी समस्याओं का निपटान करने और प्रामाणिक आकलन का अवसर दें।

इसमें कोई शक नहीं है कि जरूरतों में विविधता को पूरा करना एक बहुत बड़ी चुनौती है लेकिन सामाजिक संबंधों को बेहतर बनाने के लिए यह एक अवसर भी है। यह एक व्यक्ति विशेष की समस्या नहीं है बल्कि प्रणाली के लिए शैक्षणिक चुनौती

स्कूलों का दायित्व मिश्रित और परस्पर विरोधी होता है जैसे कि उनकी संस्कृति के उत्पाद और उस संस्कृति को बदलने की उनकी अग्रणी जिम्मेदारी। यही कारण है कि समावेशी शिक्षा के लिए चल रहे किसी आंदोलन में स्थानीय समुदाय की भागीदारी आवश्यक होती है। सीखने वालों की विभिन्नता अपने आप में सीखने का विपुल संसाधन होती है।

है। इन चुनौतियों का सामना करने का अर्थ है प्रणालियों में सुधार करना ताकि अध्यापक अपने छात्रों को उनके मुकाम तक पहुंचा सके। अगर सही में समावेशी शिक्षा अपनी सार्थक भूमिका निभाती है तो सभी के जीवन में एक उपलब्धि हासिल हो सकती है जो आने वाली चुनौतियों, दिक्कतों, दुविधाओं को दूर करने में मददगार होगी और साथ ही वह बदलाव का संकेत भी दर्शाएगी।

स्कूलों की पहचान वैश्विक समुदाय के युवा नागरिकों को तैयार करने के सामाजिक अनुभव के प्रमुख आयामों में होनी चाहिए। इस समावेशन में ज्यादा सहिष्णु, सभ्य और बहुल वैश्विक समुदाय के निर्माण में यह सहज हल दिखता है।

स्कूलों का दायित्व मिश्रित और परस्पर विरोधी होता है जैसे कि उनकी संस्कृति के उत्पाद और उस संस्कृति को बदलने की उनकी अग्रणी जिम्मेदारी। यही कारण है कि समावेशी शिक्षा के लिए चल रहे किसी आंदोलन में स्थानीय समुदाय की भागीदारी आवश्यक होती है। सीखने वालों की विभिन्नता अपने आप में सीखने का विपुल संसाधन होती है।

हमउम्र लोगों का साथ-साथ पढ़ना और बच्चों के बीच सहकार्य की भावना सीखने वालों के समुदाय में एक अच्छे संसाधन का काम करता है। सीखने वालों के माता-पिता अपने बच्चों के बारे में अच्छी समझ रखते हैं और ये बात काफी अहम होती है खासकर तब जब सीखने वाले की क्षमता को लेकर उनमें चिंता बनी रहती है।

सभी समुदायों में सीखने के मौके होते हैं, जरूरत बस शिक्षा फैलाने में उनके बेहतर इस्तेमाल की होती है। समावेशन एक बहुत ही अच्छा दर्शन है। असल में सभी पेशेवर डिग्री को लेकर सहमत दिखते हैं लेकिन शिक्षा प्रदान करने का उनका अभ्यास स्कूल दर स्कूल और सच कहें तो शिक्षक दर शिक्षक बदलता रहता है। *वन प्लान फिट्स ऑल* जैसा कोई हल संभव नहीं हो सकता है फिर भी शिक्षा की कुछ निश्चित रणनीतियां हैं जो सामान्य शिक्षा वर्गों के सभी छात्रों की अद्वितीय शैक्षिक, सामाजिक और अनुदेशात्मक जरूरतें पूरी करती हैं।

ये रणनीतियां जरूरी होती हैं ताकि समावेशन सैद्धांतिक और मूल्यों से भरी प्रक्रिया से होते हुए कक्षा अभ्यास तक में झलके। समावेशन को विभिन्नता के लिए प्रावधान बनाना चाहिए। समावेशन की सफलता वर्ग शिक्षक के हाथ में निहित होती है जो शैक्षिक बदलाव और स्कूली वातावरण की सर्वश्रेष्ठ कुंजी है। शिक्षक ही निर्मित शैक्षिक वास्तुस्थिति में तय नीतियों को लागू करने में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। इसके लिए सोच में बदलाव की जरूरत है जहां शिक्षा से जुड़े सभी सदस्यों को उनमें मतभेद के बावजूद मूल्यवान बनाना होगा। शिक्षकों को इस विश्वास की गांठ बांध लेनी होगी कि सभी छात्र सीख सकते हैं और विभिन्न पृष्ठभूमि वाले छात्रों की सफलता के लिए योजना बनानी होगी। यह जरूरी है कि शिक्षक कक्षा में विभिन्न योग्यता वाले छात्रों को स्वीकारें, उन्हें पहचानें और उनका उत्सव मनाएं। दूसरे शब्दों में कहें तो शिक्षकों को चाहिए कि विभिन्नता को स्वीकारते हुए कक्षा में बच्चों को सिखाने के मामले में जिसकी जैसी जरूरत उनको वैसी शिक्षा के सिद्धांत को बढ़ावा दें। एक समावेशी कक्षा में प्रभावी शिक्षण के माध्यम से अलग पृष्ठभूमि और जरूरतों के साथ शिक्षण रणनीतियों की मांग को समायोजित कर सकते है। कक्षा के भीतर तीन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में ये रणनीतियां अहम हो जाती है वह हैं–

- सीखने के संदर्भ में
- सीखने की सामग्री
- शिक्षण सीखने की प्रक्रिया
- शिक्षा का संदर्भ

अगर समावेशी रूप में देखा जाए तो शिक्षा को लेकर दोतरफा प्रक्रिया जिसमें बढ़ती भागीदारी और सीखने और शिक्षा ग्रहण करने वाले की भागीदारी के सामने बाधाएं हटाने को लेकर शिक्षा के संदर्भ में योजना बनाना बेहद महत्वपूर्ण है। इसमें न सिर्फ वातावरण संबंधी बदलाव होते हैं जैसे शारीरिक व्यवस्थाएं,

एक समावेशी समायोजन में जहां समूह और विश्वास की महान भावना आती है क्योंकि भिन्न आयु के बच्चे सहयोग के वातावरण में आगे बढ़ते है न कि प्रतिस्पर्धा की भावना से। इससे पता चलता है कि उचित संसाधनों और अनुभवों के साथ सावधानी से बनाई गई योजना सभी बच्चों के लिए जरूरी है।

कमरे में बदलाव, व्हीलचेयर के लिए भूतल में पुन व्यवस्थाएं करना आदि लेकिन साथ ही मुख्यधारा के स्कूलों में पुरानी प्रचलित सोच में भी बदलाव पर ध्यान केंद्रित करना होता है जिसमें अकादमिक कुशलता का पैमाना महत्वपूर्ण कारक होता है।

एक समावेशी समायोजन में जहां समूह और विश्वास की महान भावना आती है क्योंकि भिन्न आयु के बच्चे सहयोग के वातावरण में आगे बढ़ते है न कि प्रतिस्पर्धा की भावना से। इससे पता चलता है कि उचित संसाधनों और अनुभवों के साथ सावधानी से बनाई गई योजना सभी बच्चों के लिए जरूरी है। ये महत्वपूर्ण है कि सामान्य शिक्षा सामाजिक योग्यता और समान संबंध शैक्षिक उपलब्धियों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं। मुख्यधारा के स्कूलों में भरोसे के वातावरण को बढ़ाने और परस्पर संबंधों को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों की शिक्षा देना बेहद लाभकारी साबित होता

है। छात्र न सिर्फ पठन सामग्री को एक दूसरे के साथ साझा करते हैं बल्कि अपने अनुभव, अपने दृष्टिकोण साझा करने के अलावा आपस में सहयोग भी करते हैं। समूहीकरण, जोड़ीदार बनाने जितना ही महत्वपूर्ण है, जैसे कि छात्र समूह में काम कर सकते हैं या मिश्रित योग्यताओं वाले समूह को विशेष भूमिका दी जा सकती है। उदाहरण के लिए समयपालक, प्रस्तोता आदि। इस तरह एक सहयोगी शिक्षा कक्षा में छात्रों के बीच प्रतिस्पर्धा नहीं कराती जिसमें छात्र अपने को साबित करने के लिए दूसरों को मात देने की कोशिश करता है।

शिक्षा की विषय वस्तु

गुणवत्ता पूर्ण निर्देश का लक्ष्य सोचे जाने के बजाए आदर्श के रूप में स्थापित किया जाता है क्योंकि शिक्षक प्रभावी निर्देश देने में संघर्ष करते हैं। अब तक शिक्षण औसत के मापदंड पर आधारित रहा है जिसका अर्थ है कि

समावेश का अर्थ सभी छात्रों को एक ही स्तर पर आंके जाने का नहीं है कि जिन्हें पहले से तय सूचनाएं दी जाएं। ज्ञान हासिल करना सक्रियता है निष्क्रियता नहीं। इसका रूपांतर होना चाहिए और इसके लिए शिक्षा ग्रहण करने वाले की भागेदारी जरूरी है। किसी समावेशी कक्षा में कई गतिविधियां एक साथ चलती हैं।

कुछ छात्र सामंजस्य नहीं बिठा पाते और दूसरे को लगता है कि शिक्षण बहुत आसान और उकताऊ है। कक्षा में विभिन्न आवश्कताओं की पूर्ति के लिए हर छात्र के अलग अलग लेखे जोखे को देखते हुए निर्देश तैयार किए जाने चाहिए। अलग अलग कक्षाएं सीखने के विकल्पों को रेखांकित कर सकती है तैयारियों के विभिन्न स्तरों को बढ़ा सकती है-

- छात्रों के बीच पाठ्यक्रम के तत्व को समझने के लिए विविधतापूर्ण रास्ते निकालना
- ऐसे विविध क्रिया-कलाप करना जिससे छात्र खुद से सूचनाओं और विचारों को समझ सकें
- ऐसे विकल्प तैयार हों कि छात्र प्रदर्शित कर सकें कि उन्होंने क्या सीखा है जैसे छात्रों को उनकी पसंद अनुसार लिखित, मौखिक या वैकल्पिक संचार के प्रयोग के आधार पर एक स्वत-उत्तर देने का फार्मेट बनाया जाए।
- कक्षा मे छात्रों की शिक्षा की जरूरतों के लक्ष्य को पूरा करना, निर्देशों को अलग-अलग करने वाली विधियों को एकल वर्णित पाठों से हटाना और सीखने के उद्देश्य और निर्देशों की गति को लेकर शिक्षकों को लचीलापन लाने की आजादी मिले। संकल्पना आधारित निर्देशों और सिद्धांत युक्त कार्य विश्लेषण न सिर्फ अयोग्य छात्रों की मदद करेंगे बल्कि कक्षा के दूसरे छात्रों को लक्ष्य निर्धारित करने में मदद करेंगे।

शिक्षण: सीखने की प्रक्रिया

समावेश का अर्थ सभी छात्रों को एक ही स्तर पर आंके जाने का नहीं है कि जिन्हें पहले से तय सूचनाएं दी जाएं। ज्ञान हासिल करना सक्रियता है निष्क्रियता नहीं। इसका रूपांतर होना चाहिए और इसके लिए शिक्षा ग्रहण करने वाले की भागेदारी जरूरी है। किसी समावेशी कक्षा में कई गतिविधियां एक साथ चलती हैं। इसलिए सिखाने की प्रक्रिया शिक्षक केंद्रित से छात्र केंद्रित की तरफ बढ़नी चाहिए। छात्रों को सक्रिय अन्वेषक की तरह विकसित होना चाहिए और इसके लिए प्रेरक विचारों को को बढ़ावा देने की रणनीतिबहुत फायदेमंद शिक्षण विधि साबित हो सकती है।

इस रणनीति का प्रयोग करने के लिए शिक्षक को खोजी शिक्षण के जरिए सभी छात्रों को उचित अनुभव, नियमों के विश्लेषण और सिद्धांत मुहैया कराने की जरूरत है। इसे ध्यान में रखते हुए समावेशी शिक्षण और कक्षा में असमर्थ छात्रों के लिए लचीलापन लाए जाने को लेकर एनसीईआरटी ने हाल ही में पाठ्यक्रम अनूकूलन पर प्राथमिक पठन सामग्री तैयार की है। ये पठन सामग्री इस सोच पर आधारित है कि शिक्षक कक्षा में सभी छात्रों को अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव प्रदान कराए और सरल भाषा और अभिव्यक्ति का प्रयोग करे जो सभी छात्रों के लिए महत्व रखे। इस पठन सामग्री में कई उदाहरणों से बताया गया है कि कैसे समावेशी कक्षा में मौजूदा शिक्षण पद्धति को बदला जाए और छात्रों को स्वतंत्र रूप से सीखने वाला और इस प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाए जाए। इस पठन सामग्री के साथ 1.58 लाख शिक्षकों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है।

भविष्य के कदम: शिक्षक क्षमता निर्माण

समावेशी शिक्षा का विकास न सिर्फ शिक्षकों की गुणवत्ता, सोच, पेशेवर दक्षता में बदलाव लाता है बल्कि उनमें भी बदलाव लाता है जो उनकी ट्रेनिंग और सहायता करते हैं। इस आकस्मिक पूर्ण परिवर्तन से निपटने के लिए शैक्षिक कर्मचारियों में पेशेवर विकास का एक लगातार और संगत कार्यक्रम चलना बेहद जरूरी है... चूंकि शिक्षक ही पूर्ण बदलाव लाने के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी होंगे, इस प्रक्रिया के तहत ये बेहद महत्वपूर्ण होगा कि समावेशी शिक्षा को वास्तविक बनाने के लिए सावधानी से योजनाएं बनें। हालांकि शिक्षा देने वाले और शिक्षा के प्रशिक्षुओं के बीच विरोधाभास जरूर हो सकता है जो शिक्षक और छात्र के बीच की दूरी को बढ़ा सकता है।

छात्रों की शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रमों को बनाने की जरूरत

चूंकि शिक्षक ही पूर्ण बदलाव लाने के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी होंगे, इस प्रक्रिया के तहत ये बेहद महत्वपूर्ण होगा कि समावेशी शिक्षा को वास्तविक बनाने के लिए सावधानी से योजनाएं बनें। हालांकि शिक्षा देने वाले और शिक्षा के प्रशिक्षुओं के बीच विरोधाभास जरूर हो सकता है जो शिक्षक और छात्र के बीच की दूरी को बढ़ा सकता है।

को देखते हुए ऐसे कोर्स लाने की दिशा में कदम उठाए जा रहे हैं जिसमें सभी विषयों का समावेशन हो। आमतौर पर पाठ्यक्रमों में लैंगिक, जातीय, भाषाई भेदों आदि विषयों से जुड़े मुद्दों की उपेक्षा की जाती है। वर्तमान समय की जरूरतों और चुनौतियों को पूरा करने के लिए एक ऐसे विशिष्ट समावेशी शैक्षिक पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जो आम और खास दोनों ही तरह के शैक्षिक पाठ्यक्रमों में मार्गदर्शक साबित हो सके। इस दिशा में निरंतर और व्यापक मूल्यांकन के नवीन दृष्टिकोण को एक सकारात्मक कदम के रूप में देखा जा रहा है। सीसीई नामक यह प्रणाली छात्रों के विद्यालय आधारित मूल्यांकन की एक पद्धति है जिसके माध्यम से बच्चे की शैक्षिक प्रक्रियाओं के सभी पक्षों का मूल्यांकन और आकलन किया जाता है। ❑